

प्रेषक,

डा० राकेश कुमार,

सचिव,

उत्तराखण्ड शासन।

सेवा में,

जिलाधिकारी,

रुद्रप्रयाग।

राजस्व अनुभाग-2

देहरादून: दिनांक: 28 दिसम्बर, 2010

विषय:- मै० आर्स एण्ड वीस एसोसियेट को ग्राम नरकोटा तहसील एवं जिला रुद्रप्रयाग में औद्योगिक प्रयोजन हेतु कुल 0.040 है० भूमि कय की अनुमति प्रदान किये जाने के संबंध में।

महोदय,

उपर्युक्त विषयक, आपके पत्र संख्या-1675/सात-14/2008-09 दिनांक-29.3.2010 के सन्दर्भ में, मुझे यह कहने का निदेश हुआ है कि, श्री राज्यपाल, मै० आर्स एण्ड वीस एसोसियेट को ग्राम नरकोटा तहसील एवं जिला रुद्रप्रयाग में औद्योगिक प्रयोजन हेतु कुल 0.040 है० भूमि कय की अनुमति, उत्तराखण्ड (उत्तर प्रदेश जमींदारी विनाश एवं भूमि व्यवस्था अधिनियम, 1950) (अनुकूलन एवं उपान्तरण आदेश, 2001) (संशोधन) अधिनियम, 2003 दिनांक 15-1-2004 की धारा-154(4)(3)(क)(V) के अन्तर्गत औद्योगिक विकास विभाग, उत्तराखण्ड शासन की अनापत्ति/सहमति एवं आपके उपरोक्त पत्र के द्वारा अनुमोदित/संस्तुत खसरा संख्या-33,34,35 के अधीन निम्नलिखित शर्तों/प्रतिबन्धों के साथ प्रदान करते हैं:-

- 1- क्रेता धारा-129-ख के अधीन विशेष श्रेणी का भूमिधर बना रहेगा और ऐसा भूमिधर भविष्य में केवल राज्य सरकार या जिले के कलेक्टर, जैसी भी स्थिति हो, की अनुमति से ही भूमि कय करने के लिये अर्ह होगा।
- 2- क्रेता बैंक या वित्तीय संस्थाओं से ऋण प्राप्त करने के लिये अपनी भूमि बन्धक या दृष्टि बन्धित कर सकेगा तथा धारा-129 के अन्तर्गत भूमिधरी अधिकारों से प्राप्त होने वाले अन्य लाभों को भी ग्रहण कर सकेगा।
- 3- क्रेता द्वारा कय की गई भूमि का उपयोग दो वर्ष की अवधि के अन्दर, जिसकी गणना भूमि के विक्रय विलेख के पंजीकरण की तिथि से की जायेगी अथवा उसके बाद ऐसी अवधि के अन्दर जिसको राज्य सरकार द्वारा ऐसे कारणों से जिन्हें लिखित रूप में अभिलिखित किया जायेगा, उसी प्रयोजन (बाटलिंग आफ मिनिरल वाटर) के लिये करेगा जिसके लिये अनुज्ञा प्रदान की गई है। यदि वह ऐसा नहीं करता अथवा उस भूमि का उपयोग जिसके लिये उसे स्वीकृत किया गया था, उससे भिन्न किसी अन्य प्रयोजन हेतु करता है अथवा जिस प्रयोजनार्थ कय किया गया था उससे भिन्न प्रयोजन के लिये विक्रय, उपहार या अन्यथा भूमि का अन्तरण करता है तो ऐसा अन्तरण उक्त अधिनियम के प्रयोजन हेतु शून्य हो जायेगा और धारा-167 के परिणाम लागू होंगे।



- 4- जिस भूमि का संक्रमण प्रस्तावित है उसके भूस्वामी अनुसूचित जाति/जनजाति के न हों और अनुसूचित जाति/जनजाति के भूमिधर होने की स्थिति में भूमि क्रय से पूर्व सम्बन्धित जिलाधिकारी से नियमानुसार अनुमति प्राप्त की जायेगी।
- 5- जिस भूमि का संक्रमण प्रस्तावित है उसके भूस्वामी असंक्रमणीय अधिकार वाले भूमिधर न हों।
- 6- शासन द्वारा दी गई भूमि क्रय की अनुमति शासनादेश निर्गत होने की तिथि से 180 दिन तक वैध रहेगी।
- 7- क्रय की जाने वाली भूमि का भू-उपयोग यदि औद्योगिक से भिन्न हो तो उसे नियमानुसार औद्योगिक में परिवर्तित कराकर शासन द्वारा निर्धारित नीति/मार्गदर्शी सिद्धान्तों के अन्तर्गत प्रचलित नियमों/मानकों एवं भवन उपविधियों के अन्तर्गत नियमानुसार कार्यवाही करते हुए औद्योगिक प्रयोजन हेतु फैक्ट्री भवन निर्माण का प्लान सीडा/सक्षम प्राधिकारी से स्वीकृत कराने के पश्चात् ही स्थल पर निर्माण कार्य प्रारम्भ किया जायेगा।
- 8- सम्बन्धित ईकाई द्वारा स्थापित किये जाने वाले उद्योग में उत्तराखण्ड मूल के बेरोजगारों न्यूनतम 70 प्रतिशत से अधिक नियमित रोजगार उपलब्ध कराया जायेगा।
- 9- प्रस्तावित भूमि, भारत सरकार द्वारा अधिसूचित नहीं है एवं बाटलिग आफ मिनिरल वाटर उत्पाद, भारत सरकार वाणिज्य एवं उद्योग मंत्रालय, औद्योगिक नीति एवं संस्वर्द्धन विभाग के कार्यालय ज्ञाप संख्या-1(10)/2001-एन0ई0आर0, दिनांक-7 जनवरी 2003 के संलग्नक-2 में दिये गये थ्रस्ट उद्योगों में क्रमांक-14 पर उल्लिखित थ्रस्ट सेक्टर क्रियाकलापों में सम्मिलित है। जिन पर घोषित/अधिसूचित औद्योगिक आस्थान/क्षेत्रों की अधिसूचित भूमि से बाहर भी भारत सरकार द्वारा घोषित विशेष पैकेज में प्रदत्त आयकर से छूट तथा केन्द्रीय पूंजी निवेश राज्य सहायता तथा राज्य सरकार द्वारा घोषित विशेष एकीकृत औद्योगिक प्रोत्साहन नीति 2008 में प्रदत्त उपादान सहायता का लाभ पात्रता के अनुसार अर्हता पूर्ण करने पर अनुमन्य होगा।
- 10- ईकाई द्वारा क्रय की जाने वाली भूमि का उपयोग बाटलिग आफ मिनिरल वाटर निर्माण के लिए ही किया जायेगा।
- 11- प्रस्तावित स्थल पर अवस्थापना विकास से सम्बन्धित कार्यों का दायित्व सम्बन्धित ईकाई का होगा।
- 12- सम्बन्धित आवेदक द्वारा भू-उपयोग करने से पूर्व सक्षम एजेन्सी (विनियमित क्षेत्र प्राधिकरण/विशेष क्षेत्र विकास प्राधिकरण/विकास प्राधिकरण) से नियमानुसार अनापत्ति प्राप्त करनी होगी तभी वह भूमि का उपयोग निर्धारित कार्य हेतु कर सकेंगे।
- 13- किसी भी दशा में प्रस्तावित क्रेताओं को प्रस्तावित भूमि के अतिरिक्त अन्य भूमि के उपयोग की अनुमति नहीं होगी एवं सार्वजनिक उपयोग की भूमि या अन्य कोई भूमि पर कब्जा न हो इसके लिये भूमि क्रय के तत्काल बाद उसका सीमांकन कर लिया जाय।
- 14- भूमि का विक्रय अपरिहार्य परिस्थितियों के अतिरिक्त अनुमन्य नहीं होगा एवं ऐसी दशा में विक्रय किये जाने हेतु सकारण शासन का अनुमोदन प्राप्त करना होगा।
- 15- योजना प्रारम्भ से पूर्व नियमानुसार सम्बन्धित विभागों/संस्थाओं से विधिक व अन्य



अनापत्तियाँ/स्वीकृतियाँ प्राप्त कर ली जायेगी।

16- उपरोक्त प्रतिबन्धों/शर्तों का पूर्णतः अनुपालन न होने पर तथा भिन्न उपयोग करने, उल्लंघन हाने की दशा में अथवा किसी अन्य कारणों से, जिसे शासन उचित समझता हो, प्रश्नगत स्वीकृति निरस्त कर दी जायेगी।

कृपया इस सम्बन्ध में तदनुसार कार्यवाही करते हुए शासनादेश के परिप्रेक्ष्य में, जनपद स्तर से निर्गत किये जाने वाले आदेश की प्रति, अनिवार्य रूप से शासन को उपलब्ध कराने का कष्ट करें।

भवदीय,

(डा० राकेश कुमार)  
सचिव।

पृ० प० सं०-1657 /समदिनांकित/2010

प्रतिलिपि-निम्नलिखित को सूचनार्थ एवं आवश्यक कार्यवाही हेतु प्रेषित:-

- 1- मुख्य राजस्व आयुक्त, उत्तराखण्ड, देहरादून।
- 2- प्रमुख सचिव, औद्योगिक विकास विभाग उत्तराखण्ड शासन।
- 3- आयुक्त, गढ़वाल मण्डल, पौड़ी।
- 4- निदेशक, उद्योग विभाग औद्योगिक क्षेत्र, पटेल नगर देहरादून।
- 5- श्री नितिन अग्रवाल, आर्स वीस एसोसियेट गजानन काम्प्लैक्स, ग्राम पोस्ट नरकोटा जनपद रुद्रप्रयाग।
- 6- निदेशक, एन०आई०सी०, उत्तराखण्ड, सचिवालय।
- 7- प्रभारी मीडिया केन्द्र, सचिवालय।
- 8- गार्ड फाईल।

आज्ञा से,



(सन्तोष बडोनी)  
अनुसचिव।